

जब सम्पूर्ण जीवन नृत्यमय हो जाता है



जीवन के ऊर्ध्वगामी विकास में सहायक पूज्य गुरुदेव की
वाणी में ये नवीनतम ऑडियो कैसेट्स

शिव सूत्र
पराविज्ञान
शिव पूजन
संध्या आरती
पारद विज्ञान
पूर्णत्व सिद्धि
राजयोग दीक्षा
निखिल स्तवन
चामुण्डा प्रयोग
कूष्माण्ड प्रयोग
महाकाली प्रयोग
महालक्ष्मी प्रयोग
कात्यायनी प्रयोग
दुर्लभ गुरु भजन
कालज्ञान विवरण

गुरु वाणी
ध्यान योग
साधना सूत्र
अष्ट सिद्धि
कायाकल्प
तंत्र रहस्य
कुण्डलिनी योग
ॐ मणि पद्मे हुं
कालज्ञान प्रयोग
लक्ष्मी मेरी चेरी
महालक्ष्मी साधना
हिप्नोटिज्म रहस्य
पूर्णत्व ब्रह्म दीक्षा
अक्षय पात्र साधना
षोडशी त्रिपुर साधना

गुरु हमारी जाति है
तारा महाविद्या प्रयोग
सांस सांस में गुरु बसे
गुरु बिन रह्यो न जाय
पारेदश्वरी लक्ष्मी प्रयोग
गुरु हृदय स्थापन प्रयोग
पूर्ण पौरुष प्राप्ति प्रयोग
ध्यान, धारणा और समाधि
निखिलेश्वर महोत्सव (६ भाग)
पाशुपतास्त्रेय प्रयोग (३ भाग)
मैं खो गया तुम भी खो जाओ
सशरीर सिद्धाश्रम प्राप्ति प्रयोग

ऑडियो कैसेट प्रति - ३०/-

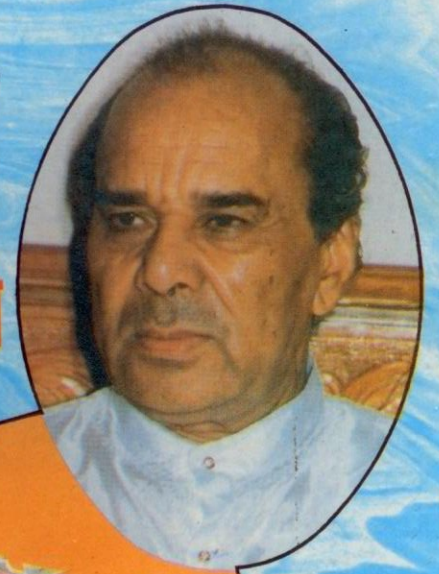
(डाक व्यय २४/- अतिरिक्त)

५ कैसेट्स से अधिक कैसेट्स मंगाने पर
डाक व्यय संस्था वहन करेगी।

सम्पर्क

सिद्धाश्रम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली, फोन : ०११-७१८२२४८, फेक्स : ०११-७१९६७००
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.) फोन : ०२९१-४३२२०९, फेक्स : ०२९१-४३२२१०

धन वर्षिणी तारा
महासरस्वती साधना विधि



डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली

© मंत्र-तंत्र-यंत्रविज्ञान

संकलन एवं सम्पादन

अरविन्द श्रीमाली

प्रकाशक

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी,

जोधपुर - ३४२ ००१ (राज.)

फोन : 0291-432209, फैक्स : 0291-432010

द्वितीय संस्करण : गुरु पूर्णिमा 2002

प्रति : 5000

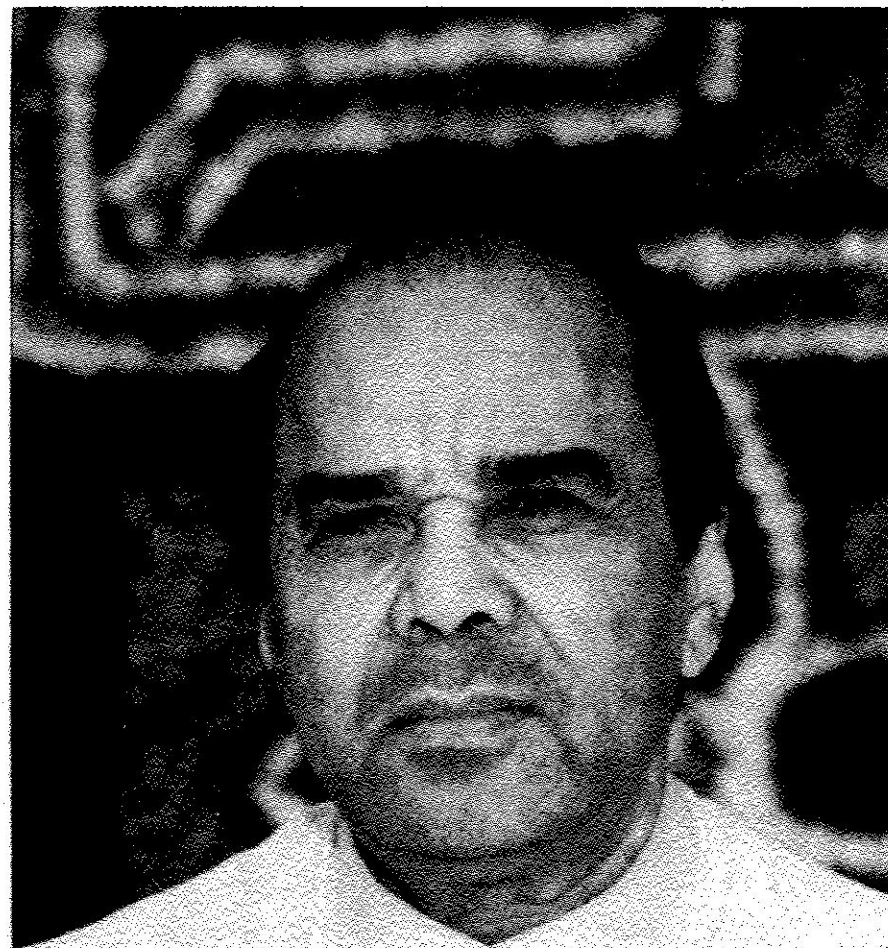
मूल्य : 20/-

मुद्रक : आर. एस. आफसेट प्रिन्टर्स,
487/84, पीरागढ़ी
दिल्ली - 28, फोन: 5262040

शब्द ब्रह्म है और वेदों से लेकर आज तक सभी योगियों, कृषियों, महर्षियों और संतों ने उन्हीं शब्दों का प्रयोग अपने तरीके से किया है, जिन शब्दों का प्रयोग वेदों और उपनिषदों में किया गया है, उन्हीं शब्दों का प्रयोग मीरा, कबीर, तुलसी और रैदास ने भी किया है, क्योंकि शब्द तो शाश्वत हैं।

यदि किसी भी व्यक्ति या महापुरुष के शब्दों और भावों से पुस्तक में वर्णित शब्दों और भावों का साम्य दिखाई दे या अनुभव होने लगे, तो यह एक संयोग है। मैं उन सभी ज्ञात-अज्ञात महापुरुषों के शब्दों का, भावों का और उनके विचारों का कृणी हूँ, क्योंकि उन सभी के साहित्य और भावों का मेरे चित्त पर गहरा असर रहा है।

यदि दुर्भाग्यवश इस पुस्तक के सम्बन्ध में किसी भी प्रकार का वाद-विवाद हो, तो ऐसी स्थिति में जोधपुर (राजस्थान) न्यायालय ही मान्य होगा। इस पुस्तक के किसी भी अंश को प्रकाशित व प्रचारित करने से पूर्व मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान द्वारा लिखित अनुमति लेना आवश्यक है।



पूज्य गुरुदेव

डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली

अनुक्रम

महासरस्वती	०६
सरस्वती की उत्पत्ति	१०
महासरस्वती साधना विधि	१४
आवरण पूजा	१८
स्तुति पाठ	३५
धनवर्षिणी तारा	३७
तारा साधना विधान	३६
श्री तारा स्त्रोतम्	४३

प्राक्कथन . . .

जीवन में धन की महत्ता सर्वोपरि है, क्योंकि सारा विश्व धन के ऊपर ही आश्रित है और पिछले पांच हजार वर्षों में धन को ही सर्वाधिक महत्त्व दिया गया है। यह अलग बात है, कि हम धन का सदुपयोग करें, दान दें, भूखों को भोजन कराएँ और जीवन को उन्नतिशील बनाने में धन का उपयोग करें अथवा दुरुपयोग करें, यह तो अपने-अपने विवेक की बात है।

पूरा संसार . . . और पूरा संसार तो क्या, प्रत्येक व्यक्ति धनोपार्जन कर उच्चकोटि का धनाढ्य बनने के लिए प्रयत्न करता रहता है, किन्तु बहुत कम ही लोग पूर्ण रूप से सम्पन्न हो पाते हैं; यद्यपि सभी लोग परिश्रम करते हैं, व्यापार करते हैं, नौकरी करते हैं और अन्य प्रकार के भी कई कार्य करते हैं, मगर इसके बावजूद भी उन्हें पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं हो पाती। इसके पीछे उनका प्रारब्ध, उनका भाग्य, उनके पूर्व जन्म के संस्कार, इस जीवन के कार्य और अन्य कई तथ्य ऐसे होते हैं, जिसकी वजह से वे जीवन में पूर्ण धनवान नहीं बन पाते— और यदि धनवान नहीं बन पाते तो उनका जीवन अपने आप में मृत्यु तुल्य बन जाता है, फिर वे नित्य पैदा होते हैं और शाम को मर जाते हैं, क्योंकि वे अपने परिवार का ही पालन-पोषण ढंग से नहीं कर पाते, वे जीवन में वैभव प्राप्त नहीं कर पाते, वे जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाते, वे परिवार को प्रसन्नता नहीं दें पाते।

इसका तात्पर्य यह हुआ, कि मात्र परिश्रम से धन प्राप्त नहीं हो सकता, यदि परिश्रम से ही धन प्राप्त होता, तो एक कारीगर या मजदूर हमसे ज्यादा परिश्रम करता है, चितचिलाती धूप में पत्थर उठाता रहता है, वह हमसे ज्यादा सम्पन्न और धनवान होता। इसका तात्पर्य यह है, कि परिश्रम से धनोपार्जन या पूर्ण वैभव प्राप्त नहीं हो सकता। इसके लिए आवश्यकता है— दैवी साधना की, दैविक सहायता की, एक ऐसी साधना जिसके माध्यम से उसके घर में लक्ष्मी पूर्णता से स्थापित हो सके।

लक्ष्मी से सम्बन्धित हजारों साधनाएँ शास्त्रों में वर्णित हैं और सभी साधनाएँ अपने-आप में पूर्णतः प्रामाणिक हैं, परन्तु साधना तो वह होनी चाहिए जो अनुभव सिद्ध हो, जिससे लाभ प्राप्त हुआ हो। इस प्रकार की साधनाओं में सर्वश्रेष्ठ साधना “तारा महाविद्या साधना” है। कहा जाता है, कि जिसने तारा महाविद्या प्राप्त कर ली, उसने पूरे संसार का वैभव प्राप्त कर लिया। उसको जीवन में धन की कमी नहीं रहती, वह आगे-आगे बढ़ता ही रहता है और लक्ष्मी वरमाला लिये हुए पीछे-पीछे चलती रहती है। वह चाहे घर में रहे, जंगल में रहे, वह चाहे कहीं भी रहे, धन की हमेशा वर्षा सी होती रहती है, दोनों हाथों से वह जितना व्यय करता है, उससे सौ गुना ज्यादा उसको अनायास ही प्राप्त होता रहता है— और धन के द्वारा उसको वैभव, यश, सम्मान, पद, प्रतिष्ठा, पूर्णता और सफलता प्राप्त होती ही रहती है। तारा, सरस्वती तथा अन्य साधनाओं के बारे में सैकड़ों ग्रंथों में सैकड़ों प्रकार से लिखा गया है और उन सभी साधनाओं को आजमा कर देखा गया, तब यह अहसास हुआ, कि अधिकांश साधनाएँ अपूर्ण हैं या न्यून हैं, कहीं न कहीं उनमें न्यूनता

उत्तर के उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में, एक नए प्रकार का धनोपार्जन का उपाय प्रकाश में आया, जो कि लक्ष्मी के आशीर्वाद से ही संभव है।

है और यही कारण है, कि हम जितना प्रयत्न करते हैं, परिश्रम करते हैं, वह बेकार चला जाता है; क्योंकि ऐसा तो हो ही नहीं सकता, कि हम तारा साधना करें और सफल नहीं हों। ऐसा तो हो ही नहीं सकता, कि हम पूर्ण विधि-विधान के साथ तारा साधना सम्पन्न करें और वह हमें प्रत्यक्ष दर्शन न दे। ऐसा तो हो ही नहीं सकता, कि पूर्ण विधि के साथ तारा साधना करें और जीवन में अभाव, दरिद्रता, कष्ट और पीड़ा रह जाय। इसलिए एक ऐसी उच्चकोटि की साधना की नितान्त आवश्यकता दिखी, जो प्रामाणिक हो, सही हो, अचूक हो और अनुभव गम्य हो; जिसके माध्यम से हम मनोवांछित सफलता प्राप्त कर सकें।

पूज्य गुरुदेव इस युग के अद्वितीय युग पुरुष हैं और उन्होंने साधना के क्षेत्र में अद्वितीयता अर्जित की है, आज पूरा भारतवर्ष उनके सामने नतमस्तक है और इस बात को स्वीकार करता है, कि जितनी प्रकार की साधनाएं पूज्यपाद गुरुदेव को ज्ञात हैं, उतनी शायद ही किसी को प्राप्त होगी या ज्ञात होगी। वे निरन्तर उस पर शोध करते रहते हैं और सिद्धाश्रम से प्राप्त साधनाओं की नूतनता को भी उसमें समाहित करते रहते हैं। उनका केवल मात्र उद्देश्य यही है, कि शिष्यों को, साधकों को या पाठकों को इस प्रकार की साधना दी जाय, जिसके माध्यम से वे पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकें और पहली बार में ही उस महाविद्या के साक्षात् दर्शन कर सकें; उसके जाज्वल्यमान स्वरूप को देख सकें और अपने घर में उसको पूर्णता के साथ स्थापित्व दे सकें। परन्तु इसके लिए आवश्यकता पड़ती है— श्रद्धा की, प्रयास की, धर्म की और पूर्णतः समर्पण की। यदि इसमें थोड़ी सी भी न्यूनता रहती है, तो साधना में सिद्धि मिलना कठिन हो जाती है। आवश्यकता है— अपने-आप पर पूर्ण विश्वास की। आवश्यकता है— गुरु पर पूर्ण आस्था की। आवश्यकता है— अपने विवेक की; और ऐसा होता है, तो साधना में सिद्धि मिलना कठिन हो ही नहीं सकता।

इस पुस्तक में तारा की उस साधना को स्पष्ट किया गया है जो विद्या और धन को एक साथ प्रदान कर सके, उसके हृदय में पूर्ण रूप से 'लक्ष्मी' स्थापित हो सके, साथ ही उसको 'वाक् सिद्धि' भी प्राप्त हो सके; वह अगर किसी को श्राप दे, तो वह शत्रु निरन्तर पतन की ओर अग्रसर हो सके; यदि किसी को वरदान दे, तो निरन्तर उसकी उन्नति हो सके, क्योंकि तारा का ही एक रूप है 'सरस्वती'।

इसीलिए इस पुस्तक में उस अद्वितीय ज्ञान को संजोकर दिया है, जो प्रत्येक पाठक के लिए एक गर्व की बात है, एक सौभाग्य की बात है, पूर्णता की बात है। जिसके घर में यह पुस्तक है, उसके घर में लक्ष्मी की न्यूनता हो ही नहीं सकती, यदि वह इसमें दी गई साधना को पूरी क्षमता के साथ सम्पन्न करे। यह केवल पुस्तक नहीं है, वरन् उसकी आने वाली पीढ़ियों के लिए सौभाग्य का प्रतीक है, उसके जीवन में वसन्त बहार है, एक पवित्रता है और सरस्वती का आगमन है, जिससे वह अपने आप में ही जीवन की श्रेष्ठता अनुभव कर सकता है और विद्वानों में पूजे जाने योग्य बन सकता है।

इसी को ध्यान में रखकर इस पुस्तक में सरस्वती से सम्बन्धित और तारा से

सम्बन्धित— दोनों साधनाओं का समन्वय स्वरूप पूर्ण पूजन, पाठ, मनन और चिन्तन दिया गया है। इस दृष्टि से यह पुस्तक अपने आप में अनन्य बन गई है, अद्वितीय बन गई है। लाखों रुपये खर्च करने के बाद भी इस प्रकार की साधना इससे पूर्व प्राप्त नहीं हो सकती थी, क्योंकि अभी तक यह साधना गोपनीय रही है।

वास्तव में ही यह पुस्तक हीरों की खान है, यह पुस्तक साधना क्षेत्र में सर्वोपरि है, जिसको उजागर करना या प्रकाशित करना अपने आप में सौभाग्य है। यह गुरुदेव की महती कृपा है, कि उन्होंने इस साधना को स्पष्टता के साथ परीक्षित किया; यह पाठकों का सौभाग्य है, कि उनको जीवन में इस प्रकार की साधना प्राप्त हुई। अब तो कोई अभागा ही होगा, जो इस पुस्तक को प्राप्त नहीं कर पायेगा; जो इस साधना को सम्पन्न नहीं कर सकेगा। इस साधना को पुरुष या स्त्री, बालक या बालिका, युवक या वृद्ध कोई भी सम्पन्न कर सकता है।

यदि किसी वजह से इस साधना में न्यूनता रह जाय, तो किसी भी प्रकार का दोष व्याप्त नहीं होता व किसी भी प्रकार की कोई न्यूनता प्रभावी नहीं रह पाती; क्योंकि जितना भी मंत्र जप होगा, उतना तो लाभ मिलता ही है। इसीलिए यह पुस्तक विद्वानों के लिए भी और सामान्य मनुष्यों के लिए भी— दोनों के लिए समान रूप से उपयोगी है।

मैं समझता हूँ, कि व्यक्ति इस साधना के माध्यम से जीवन की दोनों महानतम स्थितियों को प्राप्त कर सकेगा। सरस्वती को अपने हृदय में, अपने कंठ में स्थापित कर सकेगा। वहीं दूसरी ओर लक्ष्मी को भी पूर्ण रूप से प्राप्त करता हुआ, जीवन में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति करता हुआ, वैभवशाली और यशस्वी बन सकेगा।

मैं सोचता हूँ, कि माता-पिता को चाहिए कि उनके बच्चे भी इस साधना को सम्पन्न करें। मैं चाहता हूँ, कि प्रत्येक व्यक्ति इससे सम्बन्धित दीक्षा गुरुदेव से प्राप्त करे और अपने जीवन में 'तारा' को स्थापित करे। प्रत्येक रोम-रोम में तारा तथा सरस्वती का स्थापन करके अपने आप में अद्वितीय बन सके। यह दीक्षा के माध्यम से भी सम्भव है। तारा साधना सम्पन्न साधक दोनों हाथों से खर्च करता है, तो भी उसके जीवन में लक्ष्मी की न्यूनता नहीं आ सकती और जब वह बोलता है, लोग मंत्र मुख होकर उसको सुनने लग जाते हैं। यह नवीनतम साधना स्थिति है। मुझे विश्वास है, कि सभी साधक और पाठक इस पुस्तक को अपने घर में पवित्रतम ग्रंथ के रूप में रख सकेंगे, इसका लाभ उठा सकेंगे और अपने जीवन में धन, यश, काम, मोक्ष, भोग, ऐश्वर्य, सफलता, पूर्णता, श्रेष्ठता और अद्वितीयता प्राप्त कर अपने जीवन की प्रत्येक इच्छा पूरी कर सकेंगे।

यही चिन्तन करता हुआ, यह पुस्तक आप सभी लोगों के हाथों में सौंपता हूँ, जिससे जीवन में अभाव नहीं रहे, जिससे जीवन में न्यूनता नहीं रहे, जिससे जीवन में किसी प्रकार की कमी नहीं रहे। वास्तव में यह पुस्तक और यह साधना जीवन की अमूल्य धरोहर है, श्रेष्ठतम सिद्धि है।





महासरस्वती

या माया मधु-कैटभ प्रमथनी, या महिषोन्माथिनी,
या धूम्रचण्ड-मुण्डदलनी, या रक्तबीजाशनी।
शक्तिः शुम्भनिशुम्भ-दैत्य मथनी, या सिद्धलक्ष्मी परा;
या देवी नवकोटि मूर्तिसहिता मां पातु विश्वेश्वरी।।

अर्थात् — “मधु और कैटभ नामक राक्षसों को मथने वाली, महिषासुर को मारने वाली, धूम्र, चण्ड, मुण्ड, रक्तबीज, शुम्भ तथा निशुम्भ आदि दैत्यों का नाश करने वाली, लक्ष्मी स्वरूपा नवकोटि देवताओं की शक्ति से समन्वित भगवती महासरस्वती मेरी रक्षा करें।”

महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती — इन तीनों स्वरूपों द्वारा सम्पूर्ण चराचर जगत की कारणभूत आद्याशक्ति परमेश्वरी की अभिव्यक्ति होती है। इन त्रिशक्तियों की मूल प्रकृति महालक्ष्मी ही हैं, जो विशुद्ध सत्त्व गुण के अंश से महासरस्वती के रूप में प्रकट होती हैं, जिनका वर्ण चन्द्रमा के समान गौर है, उन्होंने अपने हाथों में अक्षमाला, अंकुश, वीणा तथा पुस्तक धारण कर रखा है।

महासरस्वती के अन्य प्रसिद्ध नाम हैं — महाविद्या, महावाणी, भारती, वाक्, सरस्वती, आर्या, ब्राह्मी, कामधेनु, वेदगर्भा, धीश्वरी (बुद्धि की स्वामिनी), तारा

ऋग्वेद में वाग्देवी का नाम सरस्वती है। ये वाणी और विद्या को प्रदान करने वाली देवी हैं। ये स्वर्ग, पृथ्वी और अन्तरिक्ष तीनों स्थानों पर निवास करने के कारण भारती, इला और सरस्वती नाम से सम्बोधित की जाती हैं। तंत्र शास्त्र में वर्णित है, कि दस महाविद्याओं में दूसरी महाविद्या तारा देवी का एक स्वरूप 'सरस्वती' भी है।

सरस्वती संगीत विद्या की अधिष्ठात्री देवी हैं, ताल, स्वर, लय, राग-रागिनी आदि का प्रादुर्भाव इनके द्वारा ही हुआ है। इनकी आराधना सात स्वरों — 'सा, रे, ग, म, प, ध, नी' द्वारा होने के कारण ये 'स्वरात्मिका' कहलाती हैं, और सप्तविध स्वरों का ज्ञान प्रदान करने के कारण भी इन्हें 'सरस्वती' कहते हैं। देवी सरस्वती की साधना से समस्त सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं, ये अपने साधक के हृदय में व्याप्त समस्त संशयों का उच्छेद कर उसे बोध प्रदान करती हैं।

सरस्वती की उत्पत्ति

'देवी भागवत्' में वर्णन आता है, कि सरस्वती देवी का प्राकट्य भगवान् श्रीकृष्ण की जिह्वा के अग्रभाग से हुआ है। सरस्वती के प्रकट होने पर श्रीकृष्ण ने उन्हें नारायण को समर्पित कर दिया। विश्व में सरस्वती पूजा का प्रचलन श्रीकृष्ण द्वारा प्रारम्भ किया गया।

देवी भागवत् के अनुसार ही भगवान् नारायण की तीन पत्नियाँ — लक्ष्मी, गंगा और सरस्वती थीं। ये तीनों अत्यन्त प्रेम से रहती हुई पूर्ण श्रद्धा के साथ भगवान् का पूजन करती थीं। किसी कार्यवश इन तीनों से उनको दूर जाना पड़ा। कार्य सम्पादित करके जब वे अंतःपुर में पधारे, उस समय तीनों देवियाँ एक ही स्थान पर बैठी हुई परस्पर अत्यन्त प्रेम से वार्तालाप कर रही थीं। भगवान् को अंतःपुर में आया देख तीनों देवियाँ उनके सम्मान में खड़ी हो गयीं। गंगा ने अत्यन्त प्रेमपूर्ण दृष्टि से भगवान् की ओर देखा, उन्होंने भी गंगा की दृष्टि का अत्यधिक स्नेह युक्त मुस्करा कर उत्तर दिया, तत्पश्चात् वे आवश्यकता वश कक्ष से बाहर चले गये।

उसी क्षण सरस्वती ने गंगा के व्यवहार को अनुचित बता कर आक्षेप किया, गंगा ने भी कठोर शब्दों में प्रतिवाद किया... और दोनों में विवाद बढ़ता गया। लक्ष्मी ने दोनों को शान्त करना चाहा, किन्तु सरस्वती ने अत्यधिक क्रोधित हो जाने के कारण गंगा को नदी बन जाने का श्राप दे दिया, इस बात को सुन गंगा ने भी क्रोधावेश में सरस्वती को नदी रूप में परिणित हो जाने का श्राप दे दिया, इन्हीं में

ही भगवान् पुनः अंतःपुर में लौट आये, तब तक देवियाँ प्रकृतिस्थ हो चुकी थीं, तदुपरान्त उन्हें अपनी भूल का आभास हुआ और भगवान् के चरणों से दूर होने के भय से रोने लगीं।

पूरा वृत्तांत सुनकर भगवान् को अत्यधिक कष्ट हुआ, किन्तु गंगा व सरस्वती की आकुलता को देखकर उन्होंने करुणार्द्र हो उन्हें आश्वासन दिया — "गंगा! तुम एक अंश से नदी हो जाओगी, किन्तु अन्य अंशों से मेरे पास ही रहोगी। सरस्वती! तुम को एक अंश से नदी बनकर रहना होगा, दूसरे अंश से ब्रह्मा जी की सेवा करनी होगी तथा शेष अंश से मेरे पास ही रहोगी। कलियुग के पांच हजार वर्ष बीतने के बाद तुम दोनों का शापोद्धार हो जायेगा।"

तदनन्तर सरस्वती अपने अंश रूप में भारत भूमि पर अवतीर्ण हो कर 'भारती' कहलायीं और अपने अंश रूप से ही ब्रह्मा जी की प्रिय पत्नी बनकर 'ब्राह्मी' नाम से भी प्रसिद्ध हुई। किसी-किसी कल्प में सरस्वती ब्रह्मा की कन्या के रूप में भी अवतीर्ण होती हैं और आजीवन कौमार्य व्रत का पालन करती हुई, ब्रह्मा की सेवा करती हैं।

ब्रह्मा के मन में एक बार विचार आया कि भूलोक पर सभी देवताओं के तीर्थ हैं, केवल मात्र मेरा ही कोई तीर्थ नहीं है। ऐसा सोचकर उन्होंने अपने नाम से एक तीर्थ स्थापित करने का निश्चय किया और एक रत्नखचित शिला को पृथ्वी पर गिराया। यह शिला अजमेर जिला में चमत्कारपुर स्थान के निकट गिरी, ब्रह्मा जी ने उसे ही अपना तीर्थ स्थल बनाया, जो 'पुष्कर' के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

तीर्थ स्थापन के पश्चात् ब्रह्मा ने वहाँ पवित्र जल से युक्त एक सरोवर बनाने का निश्चय किया, अतः उन्होंने सरस्वती को आवाहित किया। इसके पूर्व सरस्वती नदी के रूप में परिणित हो कर, पापात्माओं के स्पर्श से बचने के लिए छिप कर पाताल में बहती थीं। ब्रह्मा द्वारा आवाहन करने पर भूतल और पूर्वोक्त शिलाओं को भेदकर वे प्रकट हुईं।

उन्हें उपस्थित देख ब्रह्मा ने कहा — "मैं इस पुष्कर तीर्थ में निवास करूँगा, अतः तुम यहीं मेरे समीप रहो, जिससे मैं तुम्हारे जल में तर्पण कर सकूँ।"

ब्रह्मा के आदेश को सुनकर सरस्वती ने अत्यन्त विनयवत् उत्तर दिया — "भगवन्! मैं लोगों के स्पर्श-भय से ही पाताल में निवास करती हूँ, किन्तु आपकी आज्ञा का उल्लंघन भी नहीं कर सकती, अतः आप जो उचित समझें वैसी व्यवस्था करें।"

सरस्वती के विनम्र वचनों को सुनकर ब्रह्मा जी ने उनके निवास के लिए एक विशाल सरोवर निर्मित करवाया, तब सरस्वती ने उसी सरोवर में आश्रय लिया। तत्पश्चात् ब्रह्मा ने बड़े-बड़े भयंकर सर्पों को बुलाकर, उन्हें सरस्वती की रक्षा करने की आज्ञा दी।

एक बार भगवाने विष्णु ने देवी सरस्वती को आज्ञा दी, कि वे “बड़वानल” को अपने प्रवाह में बहाकर समुद्र में छोड़ दें। सरस्वती ने इसके लिए ब्रह्मा से भी आज्ञा प्राप्त कर, इस कार्य को सम्पादित करने के विचार किया। लोकहित के कारण ब्रह्मा ने भी इस कार्य के लिए अनुमति प्रदान कर दी। सरस्वती ने कहा — “भगवन्! यदि मैं पृथ्वी पर नदी रूप में प्रकट होकर इस अग्नि को ले जाऊंगी तो मुझे भय है, कि पापी जनों के सम्पर्क से मेरा स्वयं का शरीर दग्ध हो जायेगा, अतः पाताल मार्ग से ही इसे समुद्र तक ले जाऊंगी।”

ब्रह्मा ने कहा — “तुम्हें इस कार्य को करने में जिस तरह से सुगमता हो, उसी प्रकार इसे सम्पन्न करो। पाताल मार्ग से जाने पर यदि कहीं बड़वानल के ताप से तुम अत्यधिक पीड़ित हो जाओ, तो वहां पृथ्वी पर नदी रूप में प्रकट हो जाना। इस प्रकार प्रकट होने पर तुम्हारे शरीर पर किसी प्रकार का दोष व्याप्त नहीं होगा।”

ब्रह्मा जी से यह उत्तर पाकर देवी सरस्वती, गायत्री, सावित्री और यमुना आदि अपनी प्रिय सखियों के साथ हिमालय पर्वत पर चली गई और वहां से नदी रूप धारण कर भूतल पर प्रवाहमान हुई। बड़वानल को लेकर वे सागर की ओर प्रस्थित हुई। इस प्रकार पाताल लोक से गमन करते तथा भूतल पर प्रकट होते हुए वे प्रभास क्षेत्र में पहुंची। वहां चार तपस्वी कठोर साधना में रत थे, उन्होंने सरस्वती को पृथक्-पृथक् अपने आश्रम के पास बुलाया और तभी समुद्र ने भी वहां प्रकट होकर सरस्वती को आवाहित किया।

सरस्वती को समुद्र तक जाना था और मुनियों की आज्ञा का भी उल्लंघन करने से श्राप मिलने का भय था, अतः उन्होंने पांच धाराओं का रूप धारण कर लिया। इस प्रकार का रूप धारण करने के कारण ‘पंचश्रोता सरस्वती’ के नाम से भी प्रसिद्ध हुई। अपनी एक धारा से वे मार्ग के अन्य विघ्नों को दूर करते हुए समुद्र से जा मिलीं तथा चार धाराओं से चारों ऋषियों को स्नान की सुविधा प्रदान कर गईं।

पुराण में कथन है, एक बार ब्रह्मा जी ने सरस्वती से कहा — “तुम किसी योग्य पुरुष के मुख में कवित्व शक्ति के रूप में निवास करो।”

ब्रह्मा जी की आज्ञा को पूरा करने हेतु सरस्वती योग्य पात्र की खोज में

विचरण करने लगीं। विभिन्न सत्यादि लोकों में भ्रमण करके तथा सातों पातालों में घूम कर ऐसे अलौकिक पुरुष की खोज करने लगीं; किन्तु उन्हें सुयोग्य पात्र नहीं मिल सका। इस खोज में पूरा सतयुग बीत गया, तदुपरान्त त्रेतायुग के आरम्भ में अपने अनुसन्धान को पूर्णता देने के लिए भ्रमण करती हुई, वे भारत भूमि पर पहुंची और तमसा नदी के किनारे विचरण करने लगीं।

तमसा नदी के तट पर महर्षि वाल्मिकी अपने शिष्यों के साथ रहते थे। प्रातःकाल वे स्नान के लिए नदी की ओर जा रहे थे, तभी उनकी दृष्टि एक व्याध के बाण से घायल क्रौंच पक्षी पर पड़ी, उसका सारा शरीर लहलुहान था और वह मृत्यु से जूझ रहा था। मादा क्रौंची उसके पास ही गिर कर तड़पती हुई करुण स्वर में चीख रही थी। पक्षी के उस जोड़े की व्यथा महर्षि से देखी नहीं गई और वे उसकी व्यथा से द्रविभूत हो उठे। अकस्मात् ही उनके मुख से चार चरणों का श्लोक निकल पड़ा —

मा निषाद प्रतिष्ठं त्वमगमः शास्वतीः समाः।

यत् क्रौंच मिथुनादेकमवधीः काममोहितम्॥

महर्षि वाल्मिकी के मुख से उच्चरित यह श्लोक सरस्वती की कृपा का फल था, क्योंकि महर्षि को देखते ही उन्होंने उनके अन्दर छिपी असाधारण प्रतिभा को पहिचान लिया था, अस्तु; उन्होंने सर्वप्रथम वाल्मिकी के मुख में ही प्रवेश किया। सरस्वती के कृपापात्र होकर ही महर्षि वाल्मिकी ‘आदि कवि, के नाम से विश्व प्रसिद्ध हुए।

मार्कण्डेय विरचित दुर्गा सप्तशती में भी सरस्वती के प्रकट होने की कथा है; जिसमें उन्होंने बताया है, कि गौरी के शरीर से ये प्रकट हुई हैं, और शरीर कोश से प्रकट होने के कारण ये ‘कौशिकी’ नाम से प्रसिद्ध हुईं। अपने कौशिकी स्वरूप से देवी सरस्वती ने शुम्भ-निशुम्भ जैसे महान दैत्यों का वध कर पृथ्वी पर सुख-शांति की स्थापना की और देवताओं तथा ऋषियों को निर्भयता प्रदान की। तंत्र और पुराणों में इनकी महिमा का विस्तृत वर्णन पढ़ने को मिलता है।

देवी महासरस्वती अनेक प्रकार से विश्व के लोगों का कल्याण करती हैं; बुद्धि, ज्ञान एवं विद्या के रूप में सारा जगत इनकी कृपा को प्राप्त कर अविभूत हो उठता है।

महासरस्वती साधना विधि

भगवती सरस्वती की सौम्य और उग्र दोनों रूपों में साधना मिलती है, सौम्य साधना से प्रायः सभी परिचित हैं, जो वाग्देवी भी कही जाती हैं। उनके उग्ररूप नील सरस्वती, विद्याराज्ञी के नाम से प्रसिद्ध हैं। शुंभ और निशुंभ का वध करते समय उन्होंने अपना उग्र स्वरूप प्रकट किया था, जिसकी साधना से साधक को अभ्युदय और निःश्रेयता की प्राप्ति होती ही है। साधक को रात्रि के अन्तिम भाग जिसे ब्रह्म मुहूर्त कहा जाता है, जाग जाना चाहिए—

**ब्राह्मे मुहूर्ते बुद्धयेत धर्मार्थमनु चिन्तयेत्।
कायक्लेशांश्च तन्मूलान् वेदतत्त्वार्थमेव च॥**

ब्रह्म मुहूर्त में जगने के बाद शय्या पर बैठकर धर्म एवं अर्थ का चिन्तन करना चाहिए तथा दैनिक जीवन निर्वाह करने में शरीर तथा इन्द्रियों को प्राप्त होने वाले क्लेश आदि के शमन का भी चिन्तन करें। इस प्रकार वेद प्रतिपादित परम तत्त्वार्थ का चिन्तन करते हुए शय्या त्याग करें। स्नान आदि नित्य क्रियाओं से निवृत्त होकर साधना कक्ष में (जिसमें साधनानुकूल सभी सामग्री सुसज्जित हों) पूर्वाभिमुख या उत्तराभिमुख हो सुखद श्वेत तथा पवित्र आसन पर बैठें। पहले पवित्रीकरण एवं आचमन करें, आचमन के बाद प्राणायाम करें।

अपने सामने चौकी पर पीला वस्त्र बिछाकर भगवती महासरस्वती का चित्र तथा यंत्र (जो प्राण प्रतिष्ठित हो) स्थापित कर लें। पहले गणपति स्मरण एवं विधिपूर्वक गुरु पूजन करने के बाद ही मूल पूजन आरम्भ करें—

ध्यान :

दोनों हाथ जोड़कर ध्यान करें—

शुक्लां ब्रह्म विचार सार परमामाद्यां जगद्ब्यापिनीं।
वीणा पुस्तक धारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्॥
हस्ते स्फाटिक मालिकां च दधतीं पद्मासने संस्थितां।
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्॥
श्री सरस्वत्यै नमः ध्यानं समर्पयामि।

— “शुक्लवर्णा, ब्रह्मस्वरूपा, आद्याशक्तिरूपा, समस्त संसार में शक्तिरूप से व्याप्त, अपने दोनों हाथों में वीणा और पुस्तक धारण की हुई, जड़ता एवं अज्ञान को नाश करने वाली स्फटिक माला धारण करके पद्मासन में विराजमान, बुद्धि की अधिष्ठात्री देवी भगवती सरस्वती को मैं शुद्ध भाव से नमन करता हूँ।”

आवाहन :

पुष्प लेकर आवाहन करें—

चतुर्भुजां चन्द्रवर्णां चतुरानन वल्लभाम्।
आवाहयामि वाग्देवीं वीणा पुस्तक धारिणीम्॥
श्री सरस्वत्यै नमः आवाहनं समर्पयामि।

गन्ध :

चन्दन या कुंकुम लगावें—

कुंकुमागरू कस्तूरी कर्पूराद्यैश्च संयुक्तम्।
गन्धं गृहाण शारदे विधिपत्नि! नमोऽस्तुते॥
श्री सरस्वत्यै नमः गन्धं समर्पयामि।

धूप :

सुगन्धित धूप लगा लें—

गुग्गुल्वगरू संयुक्तं भक्त्या दत्तं विधिप्रिये।

धूपं गृहाण देवेशि! मातृमण्डल पूजिते ।।

श्री सरस्वत्यै नमः धूपम् आग्रापयामि ।

दीप :

दीपक दिखावें—

घृताक्तधर्ति संयुक्तं वाणि चैतन्य दीपितम् ।

दीपं गृहाण वरदे कमलासन वल्लभे ।।

श्री सरस्वत्यै नमः दीपं दर्शयामि ।

नैवेद्य :

मिष्ठान्न का भोग लगावें—

शर्कराघृत संयुक्तं मधुरं स्वादु चोत्तमं ।

उपहार समायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ।।

श्री सरस्वत्यै नमः नैवेद्यं निवेदयामि,

ऋतुफलानि च समर्पयामि नमः ।

नीराजन :

आरती करें—

नीराजनं नीरजाक्षि नीरजासन वल्लभे ।

कर्पूरखण्ड कलितं गृहाण करुणार्णवे ।।

श्री सरस्वत्यै नमः नीराजनं समर्पयामि ।

पुष्पांजलि :

दोनों हाथों में खुले पुष्प ले लें—

पुष्पांजलि रम्या दत्ता गृहाण वर्णमालिनि ।

शारदे लोकमातस्त्वं आश्रितेष्ट प्रदायिनि ।।

श्री सरस्वत्यै नमः पुष्पांजलिं समर्पयामि ।

नमस्कार :

दोनों हाथ जोड़ें—

या कुन्देन्दु तुषारहार धवला या शुभ्रवस्त्रावृता,

या वीणा वरदण्डमण्डितकरा या श्वेत पद्मासना ।

या ब्रह्माच्युत शंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता,

सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ।।

विशेषार्घ्य :

दाहिने हाथ में जल लें, उसमें अक्षत, पुष्प मिला कर लें—

अधहीने गृहाणेदम् अर्घ्यमष्टांग संयुक्तं ।

अम्बाखिलानां जगतामम्बुजासन सुन्दरि ।।

श्री सरस्वत्यै नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि ।

अनया पूजया श्री सरस्वती देवता प्रीयन्ताम्

ॐ तत् सत् ब्रह्मार्पणमस्तु ।

तत्पश्चात् मूल पूजन प्रारम्भ करें, “महासरस्वती यंत्र” को अपने सामने किसी प्लेट में कुंकुम से स्वस्तिक अंकित कर, स्थापित कर दें ।

विनियोग :

दाहिने हाथ में जल लेकर निम्न संदर्भ का उच्चारण करें—

ॐ ब्रह्म ऋषये नमः शिरसि ।

अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे ।

सरस्वती देवतायै नमः हृदि ।

विनियोगाय नमः सर्वांगे ।

कर न्यास :

ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौः अंगुष्ठाभ्यां नमः ।

क्लीं हीं ऐं ब्लूं स्त्रीं तर्जनीभ्यां नमः ।
 नीलसरस्वती मध्यमाभ्यां नमः ।
 द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः अनामिकाभ्यां नमः ।
 ऐं हीं श्रीं क्लीं सौः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।
 सौः हीं स्वाहा करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः ।

हृदयादिन्यास :

ऐं हीं श्रीं क्लीं सौः हृदयाय नमः ।
 क्लीं हीं ऐं ब्लूं स्त्रीं शिरसे स्वाहा ।
 नीलतारे सरस्वति शिखायै वषट् ।
 द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः कवचाय हुम् ।
 ऐं हीं श्रीं क्लीं सौः नेत्रत्रयाय वौषट् ।
 सौः हीं स्वाहा अस्त्राय फट् ।

ध्यान :

दोनों हाथ जोड़कर भगवती सरस्वती का ध्यान करें—

घण्टाशूल हलानि शंखमुसले चक्रं धनुः सायकं,
 हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशु तुल्यप्रभां ।
 गौरीदेह समुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा,
 पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि दैत्यादिनीम् ।।

— “घण्टा, त्रिशूल, हल, शंख, मूसल, चक्र, धनुष एवं बाण आदि आयुधों को अपने दिव्य हाथों में धारण की हुई, अत्यधिक शोभायुक्त, चन्द्रमा के समान सुशीतल, पार्वती की देह से समुत्पन्न, तीनों लोकों की आधारभूता, शुम्भ-निशुम्भ आदि दानवों का संहार करने वाली भगवती सरस्वती का मैं भावपूर्ण हृदय से ध्यान करता हूँ।”

आवरण पूजा :

ध्यान के पश्चात् आवरण पूजन प्रारम्भ करें। आवरण पूजन में यंत्र के प्रत्येक घेरे का क्रमवार पूजन किया जाता है, जो अत्यधिक सूक्ष्म एवं दुरूह पद्धति

है, जिसे प्रत्येक साधक के द्वारा सम्पन्न करना सम्भव नहीं है; अतः सभी साधकों तथा सामान्य पाठकों के लाभार्थ आवरण पूजा की सहज व लघु पद्धति प्रस्तुत की जा रही। इस पद्धति के द्वारा प्रत्येक व्यक्ति पूजन सम्पन्न कर सकता है तथा इस पद्धति द्वारा पूजन करने से भी पूजन का पूर्ण लाभ प्राप्त होता है।

प्रथमावरण पूजा :

अपने बायें हाथ में कुंकुम से रंगे अक्षत (चावल) ले लें और निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए, अक्षत को यंत्र पर चढ़ाते रहें—

ॐ मेघायै नमः । ॐ प्रज्ञायै नमः ।
 ॐ प्रभायै नमः । ॐ विद्यायै नमः ।
 ॐ धियै नमः । ॐ धृत्यै नमः ।
 ॐ स्मृत्यै नमः । ॐ बुद्ध्यै नमः ।
 ॐ विश्वेश्वर्यै नमः ।

प्रथमावरण पूजन के बाद यंत्र को किसी ताम्र पात्र में रखकर दूध, दही, घी, शहद एवं शक्कर से स्नान करावें, फिर शुद्ध वस्त्र से पोंछ दें—

हौं सरस्वती योग पीठात्मने नमः

इस मंत्र से पुष्पादि आसन देकर पुनः प्लेट में यंत्र को स्थापित करें तथा “ॐ श्रीं हीं हसौः महा सरस्वत्यै नमः” मंत्र से मूर्ति की कल्पना करके, विनयवत् आवरण पूजा के लिए आज्ञा मांगें—

संविन्मये परे देवि परामृतरस प्रिये ।।

अनुज्ञां देहि मे मातः परिवारार्चनाय मे ।।

तदुपरान्त एक अन्य प्लेट में मौली सूत्र लपेट कर पांच सुपारी स्थापित करें, जो गणपति, क्षेत्रपाल, बटुक भैरव व गुरु की प्रतीक हैं तथा निम्न मंत्रोच्चारण के साथ इन पर पुष्प अर्पित करें—

ॐ विघ्नेशाय नमः

विघ्नेश श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः

क्षेत्रपाल श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ बं बटुकाय नमः

बटुक भैरव श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ यं योगिन्यै नमः

योगिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ श्री गुरवे नमः

श्री गुरु पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ अणिमायै नमः

अणिमा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ लघिमायै नमः

लघिमा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ महिमायै नमः

महिमा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ असितायै नमः

असिता श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ वशितायै नमः

वशिता श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ कामपूरिण्यै नमः

कामपूरिणी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ गरिमायै नमः

गरिमा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ प्राप्त्यै नमः

प्राप्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ असितांग भैरवाय नमः

असितांग भैरव श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ रुरु भैरवाय नमः

रुरु भैरव श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ चण्ड भैरवाय नमः

चण्ड भैरव श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ भैरवाय नमः

भैरव श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ क्रोध भैरवाय नमः

क्रोध भैरव श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ उन्मत्त भैरवाय नमः

उन्मत्त भैरव श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ कपाल भैरवाय नमः

कपाल भैरव श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ भीषण भैरवाय नमः

भीषण भैरव श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ संहार भैरवाय नमः

संहार भैरव श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ ब्राह्म्यै भैरवाय नमः

ब्राह्मी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ माहेश्वर्यै भैरवाय नमः

माहेश्वरी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ कौमार्यै भैरवाय नमः

कौमारी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ वैष्णव्यै भैरवाय नमः

वैष्णवी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ वाराह्यै भैरवाय नमः

वाराही श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ इन्द्राण्यै भैरवाय नमः

इन्द्राणी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ चामुण्डायै भैरवाय नमः

चामुण्डा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ महालक्ष्म्यै भैरवाय नमः

महालक्ष्मी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर निम्न मंत्र का उच्चारण करें तथा पुष्पाञ्जलि समर्पित कर दें—

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले।

भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥

द्वितीयावरण पूजा :

द्वितीयावरण पूजन के लिए बायें हाथ में हल्दी से रंगे अक्षत ले लें तथा दाहिने हाथ से यंत्र पर चढ़ाते हुए चौसठ शक्तियों का पूजन करें—

ॐ कुलेश्वर्यै नमः

कुलेश्वरी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ कुलनन्दायै नमः

कुलनन्दा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ वागीश्वर्यै नमः

वागीश्वरी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ भैरव्यै नमः

भैरवी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ उमायै नमः

उमा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ श्रियै नमः

श्री श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ शान्त्यै नमः

शान्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ चण्डायै नमः

चण्डा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ धूम्रायै नमः

धूम्रा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ काल्यै नमः

काली श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ करालिन्यै नमः

करालिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ महालक्ष्म्यै नमः

महालक्ष्मी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ कंकाल्यै नमः

कंकाली श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ रुद्रकाल्यै नमः

रुद्रकाली श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ सरस्वत्यै नमः

सरस्वती श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ वाग्वादिन्यै नमः

वाग्वादिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ नकुल्यै नमः

नकुली श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ भद्रकाल्यै नमः

भद्रकाली श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ शशिप्रभायै नमः

शशिप्रभा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ प्रत्यंगिरायै नमः

प्रत्यंगिरा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ सिद्धलक्ष्म्यै नमः

सिद्ध लक्ष्मी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ अमृतेश्वर्यै नमः

अमृता श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ चण्डिकायै नमः

चण्डिका श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ खेचर्यै नमः

खेचरी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ भूचर्यै नमः

भूचरी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ सिद्धायै नमः

सिद्धा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ कामाक्ष्यै नमः

कामाक्षा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ बलायै नमः

बला श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ जयायै नमः

जया श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ विजयायै नमः

विजया श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ अजितायै नमः

अजिता श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ नित्यायै नमः

नित्या श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ अपराजितायै नमः

अपराजिता श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ विलासिन्यै नमः

विलासिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ अघोरायै नमः

अघोरा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ चित्रायै नमः

चित्रा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ मुग्धायै नमः

मुग्धा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ धनेश्वर्यै नमः

धनेश्वरी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ सोमेश्वर्यै नमः

सोमेश्वरी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ महाचण्ड्यै नमः

महाचण्डी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ विद्यायै नमः

विद्या श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ हंस्यै नमः

हंसी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ विनायकायै नमः

विनायका श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ वेदगर्भायै नमः

वेदगर्भा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ भीमायै नमः

भीमा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ उग्रायै नमः

उग्रा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ वेद्यायै नमः

वेद्या श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ सद्गत्यै नमः

सद्गति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ उग्रेश्वर्यै नमः

उग्रेश्वरी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ चन्द्रगर्भायै नमः

चन्द्रगर्भा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ ज्योत्स्नायै नमः

ज्योत्स्ना श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ सत्यायै नमः

सत्या श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ यशोवत्यै नमः

यशोवती श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ कुलिकायै नमः

कुलिका श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ कामिन्यै नमः

कामिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ काम्यायै नमः

काम्या श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ ज्ञानवत्यै नमः

ज्ञानवती श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ डाकिन्यै नमः

डाकिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ राकिन्यै नमः

राकिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ लाकिन्यै नमः

लाकिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ काकिन्यै नमः

काकिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ शाकिन्यै नमः

शाकिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ हाकिन्यै नमः

हाकिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

हाथ में जल लेकर निम्न मंत्र का उच्चारण करें तथा पुष्प यंत्र पर चढ़ा दें—

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्॥

तृतीयावरण पूजा :

बायें हाथ में अक्षत ले लें और दाहिने हाथ से यंत्र पर अर्पित करते हुए बत्तीस शक्तियों का पूजन करें—

- ॐ किरातायै नमः
किरात श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
- ॐ योगिन्यै नमः
योगिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
- ॐ वीरायै नमः
वीरा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
- ॐ वेतालायै नमः
वेताला श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
- ॐ यक्षिण्यै नमः
यक्षिणी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
- ॐ हरायै नमः
हरा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
- ॐ ऊर्ध्वकेश्यै नमः
ऊर्ध्वकेशी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
- ॐ मातंग्यै नमः
मातंगी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

- ॐ मोहिन्यै नमः
मोहिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
- ॐ वंशवर्द्धिन्यै नमः
वंशवर्द्धिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
- ॐ ललितायै नमः
ललिता श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
- ॐ दूत्यै नमः
दूती श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
- ॐ मनोजायै नमः
मनोजा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
- ॐ पद्मिन्यै नमः
पद्मिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
- ॐ धरायै नमः
धरा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
- ॐ वर्वर्यै नमः
वर्वरी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
- ॐ क्षत्रहस्तायै नमः
क्षत्रहस्ता श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
- ॐ रक्तायै नमः
रक्ता श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
- ॐ नेत्रायै नमः
नेत्रा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
- ॐ विचर्चिकायै नमः
विचर्चिका श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ श्यामलायै नमः

श्यामला श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ बलायै नमः

बला श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ पिशाच्यै नमः

पिशाची श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ विदार्यै नमः

विदारी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ शीतलायै नमः

शीतला श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ वज्रयोगिन्यै नमः

वज्रयोगिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ सर्वेश्वर्यै नमः

सर्वेश्वरी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

पुनः पुष्पाञ्जलि लेकर निम्न मंत्र का उच्चारण करें और पुष्प यंत्र पर अर्पित कर दें—

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले।

भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम्॥

पंचमावरण पूजा :

बायें हाथ में आठ कमल बीज ले लें। मंत्रोच्चारण करते हुए, दाहिने हाथ से एक-एक कमल बीज यंत्र पर अर्पित करते हुए आठ सरस्वतियों का पूजन करें—

ॐ नमः पद्मासने शब्दरूपे ऐं हीं क्लीं वद वद वाग्वादिनी स्वाहा।

वाग्वादिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ह्रस्व क्लृ हीं वद वद चित्रेश्वरी ऐं स्वाहा।

चित्रेश्वरी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ऐं कुलजे ऐं सरस्वती स्वाहा।

कलुजा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ऐं हीं श्रीं वद वद कीर्तीश्वरी स्वाहा।

कीर्तीश्वरी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ऐं हीं अन्तरिक्ष सरस्वती स्वाहा।

अन्तरिक्ष सरस्वती श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ह्रस्व ष्रे ह्रस्व सौः ष्रीं ऐं हीं श्रीं द्रां हीं क्लीं ब्लूं सः हनीं घट सरस्वती घटे वद वद तर तर रुद्राज्ञया ममाभिलाषं कुरु कुरु स्वाहा।

घट सरस्वती श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ब्लूं वें वद वद त्रीं हूं फट्।

नीला श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ऐं हैं हीं किणि किणि विच्चे।

किणि श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

पुनः पुष्पाञ्जलि लेकर निम्न मंत्र का उच्चारण करें और पुष्प को यंत्र पर अर्पित कर दें।

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले।

भक्त्या समर्पये तुभ्यं पंचमावरणार्चनम्॥

षष्ठावरण पूजन :

बायें हाथ में काली सरसों ले लें और दाहिने हाथ से यंत्र पर अर्पित करते हुए छः योगिनियों की पूजा करें—

ॐ डाकिन्यै नमः।

डाकिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ शाकिन्यै नमः ।

शाकिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ लाकिन्यै नमः ।

लाकिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ काकिन्यै नमः ।

काकिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ राकिन्यै नमः ।

राकिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ हाकिन्यै नमः ।

हाकिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

पुष्पाञ्जलि लेकर निम्न मंत्र का उच्चारण करें और पुष्प यंत्र पर अर्पित करें—

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले ।

भवत्या समर्पये तुभ्यं षष्ठावरणार्चनम् ।।

सप्तमावरण पूजा :

बायें हाथ में तीन पुष्प ले लें और यंत्र पर दाहिने हाथ से अर्पित करते हुए तीन भैरवियों का पूजन करें—

हीं परायै नमः ।

परा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ऐं क्लीं सौः बलायै नमः ।

बला श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ह्र स्मै ह्र क्लीं ह्र सौः भैरव्यै नमः ।

भैरवी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

पुनः पुष्पाञ्जलि लेकर निम्न मंत्र का उच्चारण करें और पुष्प यंत्र पर

अर्पित कर दें—

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले ।

भवत्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम् ।।

मंत्र जप

आवरण पूजन करने के पश्चात् “सफेद हकीक माला” अथवा “स्फटिक माला” से निम्न मंत्र का एक माला मंत्र-जप करें—

मंत्र

“ऐं हीं श्रीं क्लीं सौं क्लीं हीं ऐं ब्लूं स्त्रीं
नीलतारे सरस्वती द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः ऐं हीं श्रीं
क्लीं सौः सौः हीं स्वाहा”

इस मंत्र का जप करने से भगवती सरस्वती प्रसन्न होकर अभीष्ट वर प्रदान करती हैं । मंत्र-जप समाप्ति के बाद आरती करें, बाद में भगवती सरस्वती का निम्न स्तुति पाठ करें—

स्तुति पाठ

मालनील सरस्वति प्रणमतां सौभाग्य सम्पत्प्रदे ।
प्रत्यालीढपदस्थिते शव हृदि स्मेराननाम्भोरुहे ।।
फुल्लेन्दीवर लोचनत्रय युते कर्तृकपालोत्पले ।
खड्गञ्चादधतीं त्वमेव शरणं त्वामीश्वरीमाश्रये ।
बुद्धिं देहि यशो देहि कवित्वं देहि देहि मे ।
कुबुद्धिं हर मे देवि! त्राहि मां शरणागतम् ।।
सभायां शास्त्रवादे तु रिपुसंघसमाकुले ।
मुष्टियन्त्रित हस्ता मां पातु नील सरस्वती ।।
नीला सरस्वती पातु हृदय मे समन्ततः ।

मूलाधारं सदा पातु फट् शक्तिर्नील सरस्वती ।।
विद्यादानरता देवी वक्त्रे नील सरस्वती ।
शास्त्रे वादे च संग्रामे जले च विषमे गिरौ ।
नित्या नित्यमयी नन्दा भद्रा नील सरस्वती ।
गायत्री सुचरित्रा च कौलव्रत परायणा ।।
महाव्याधि हरा देवी शुम्भासुर निषूदिनी ।
महापुण्य प्रदा भीमा मधु कैटभ नाशिनी ।।

पूर्ण श्रद्धा-भावना से युक्त हो सरस्वती देवी को प्रणाम करें तथा पूरे परिवार में प्रसाद वितरित करें । सम्पूर्ण विधि-विधान द्वारा सम्पन्न पूजन से निश्चित रूप से विद्या, धन, सुख, पुष्टि, आयु, कीर्ति, बल, स्त्री, सौन्दर्य तथा साधक की जो भी मनोकामना होती है, वह पूर्ण होती ही है ।

॥ इति सिद्धिम् ॥



धनवर्षिणी तारा साधना

ऋषियों द्वारा निर्मित श्रौत-सिद्धान्तों के अनुसार इस पूरे ब्रह्माण्ड में एक भी स्थान ऐसा नहीं है, जो वाक्-तत्त्व से प्रादुर्भूत होने वाले शब्द-प्रपञ्चों से रिक्त हो; अतः महर्षियों ने सम्पूर्ण शब्द-राशि को दो भागों में विभक्त कर दिया — 'आगम' और 'निगम' । ये दोनों ही विश्व का निरूपण करते हैं और 'शास्त्र विद्या' के नाम से प्रसिद्ध हुए । विश्व का प्रत्येक पदार्थ एक क्षुद्र विद्या है तथा सम्पूर्ण विश्व की विद्याएं मिलकर महाविद्या कहलाती हैं । इस महाविश्वविद्या को ही सृष्टिक्रम के अनुसार दस भागों में विभक्त किया गया । 'निगम' रूप में ये विद्याएं दशावयवविद्या 'विराड़ विद्या' के नाम से तथा 'आगम' रूप में 'महाविद्या' के नाम से प्रसिद्ध हैं ।

- निगम शास्त्र में सम्पूर्ण विश्व की रचना का आधार सूर्य को माना गया है । सौरमण्डल आग्नेय है, अतः हिरण्मय कहलाता है । हिरण्मय-मण्डल के मध्य में सौर-ब्रह्म-तत्त्व प्रतिष्ठित है, अतः सौर ब्रह्म को ही 'हिरण्य-गर्भ' कहा जाता है । इस प्रकार विश्वाधिष्ठाता हिरण्यगर्भ पुरुष की शक्ति तारा कही गयी है ।
- आगम शास्त्र के अनुसार महा तम के केन्द्र में उत्पन्न होने वाले सूर्य को 'नक्षत्र' कहा गया है, अतः उनकी शक्ति 'तारा' नाम से जानी गयी ।
- ओंकार (प्रणव) को 'तारक' कहा गया है और प्रणवस्वरूपा होने के कारण

ही भगवती 'तारा' हैं।

'तारा' शब्द का सरलार्थ है— उबारने वाली, तारने वाली। इस प्रकार दैहिक, दैविक और भौतिक— इन तीनों प्रकार के तापों से तारने के कारण ही भगवती 'तारा' कही गयीं।

पतञ्जलि ने कहा है— १. अविद्या, २. द्वेष, ३. अस्मिता, ४. राग, तथा ५. अभिनिवेश— इन पांच प्रकार के क्लेशों से भगवती तारा अपने साधक की रक्षा करती हैं।

तारा के प्रमुख तीन स्वरूपों की साधना इनके अराधकों द्वारा की जाती है—

१. उग्रतारा

साधकों को कठिन दुःख से मुक्त करके भव सागर से पार उतारने वाली हैं। ये साधक को उग्र आपत्ति रूपी भव-बन्धन से मुक्त कराने वाली हैं।

२. एकजटा

ये अपने साधक को कैवल्य प्रदान करती हैं।

३. नील सरस्वती

ये अपने साधक को ज्ञान, विद्या और बुद्धि प्रदान करने वाली हैं।

भगवती तारा के इन तीनों रूपों की साधना करना अत्यधिक फलदायी है, अतः वर्तमान समय में अपने जीवन को परिपूर्ण बनाये रखने के लिए, जीवन को प्रत्येक विपत्तियों से सुरक्षित रखने के लिए तथा घर में सम्पन्नता बनाये रखने के लिए, इन तीन तत्त्वों की प्राप्ति के लिए जो जीवन के लिए अत्यधिक आवश्यक एवं महत्वपूर्ण हैं, भगवती तारा की साधना करनी चाहिए।

तारा साधना कोई भी साधक सम्पन्न कर सकता है, इस साधना में पुरुष या स्त्री का भेद-भाव नहीं है। इस साधना को किसी भी जाति और वर्ण का व्यक्ति सम्पन्न कर सकता है, साथ ही इस साधना को सम्पन्न करने के लिए उम्र भी बाधक नहीं है, अतः चाहे बालक हो, चाहे युवक हो अथवा वृद्ध हो, कोई भी इस साधना को सम्पन्न कर सकता है। पूर्ण विधान से साधना सम्पन्न करने वाले साधक को जीवन पर्यन्त आर्थिक रूप से कमी का एहसास नहीं होता है, साधक की सम्पूर्ण मनोकामना पूर्ण होती ही है।

विस्तृत विवेचना के चक्र में न पड़कर साधकों के हितार्थ भगवती तारा की पूजन-पद्धति प्रस्तुत की जा रही है—

तारा साधना विधान

साधक पहले से ही 'तारा महायंत्र' एवं 'काली हकीक माला' अपने पास रखें। इस साधना में गुलाबी रंग (हल्के लाल रंग) की प्रधानता है, अतः साधक के वस्त्र एवं आसन गुलाबी ही हों। निर्धारित समय पर पूजा गृह में उत्तर या पूर्व दिशा की ओर मुंह करके बैठें। बाजोट पर गुलाबी वस्त्र बिछा दें और उस पर गुलाबी रंग से रंगे चावलों की तीन ढेरियाँ बना दें, इन ढेरियों पर एक-एक लवंग रखें। तारा महायंत्र (चित्र हो तो उसे भी) को तीनों ढेरियों के पीछे गुलाब पुष्प पर स्थापित करें। घी का दीपक लगायें और पूजन प्रारम्भ करें—

पवित्रीकरण

सर्वप्रथम बायें हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ से ढकें तथा निम्न मंत्रोच्चारण के बाद उस जल को अपने ऊपर छिड़कें—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।

यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

आचमन

दाहिने हाथ में क्रमशः तीन बार आचमनी से जल लें और निम्न मंत्र का उच्चारण कर जल को होठों से लगायें—

ॐ ह्रीं त्रीं हुं फट् उग्रतारायै नमः।

ह्रीं त्रीं हुं फट् एकजटायै नमः।

ह्रीं त्रीं हुं नील सरस्वत्यै नमः।

जल से हाथ को धो लें।

शिखा बन्धन

दाहिने हाथ को सिर पर रखें—

“ॐ मणिधरि वज्रिणि शिखरिणि सर्ववशंकरिणि कं हुं फट् स्वाहा”

उपरोक्त मंत्र से शिखा बन्धन करें।

भूमि (आसन) पूजन

आसन के दाहिने कोने को थोड़ा सा उठा कर कुंकुम से एक वृत्त बनायें तथा पुष्प, अक्षत चढ़ाते हुए निम्न मंत्र बोलें—

ॐ पवित्र वज्रभूमे हुं फट् स्वाहा

विघ्न उत्सारण

दसों दिशाओं में अक्षत उछालते हुए दिव्य, अन्तरिक्ष तथा भौम— इन तीनों से उत्पन्न विघ्नों का उत्सारण करते हुए मंत्र बोलें—

ॐ रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा

तत्पश्चात् निम्न मंत्रों का उच्चारण करते हुए निर्दिष्ट स्थानों का स्पर्श करें—

ॐ वैरोचनाय नमः	—	मुख
ॐ शंखाय नमः	—	दक्षिण नासिका
ॐ पाण्डवाय नमः	—	वाम नासिका
ॐ पद्मनाभाय नमः	—	दक्षिण नेत्र
ॐ अमिताभाय नमः	—	वाम नेत्र
ॐ नामकाय नमः	—	दक्षिण कर्ण
ॐ भामकाय नमः	—	वाम कर्ण
ॐ तावकाय नमः	—	ग्रीवा
ॐ पद्मान्तकाय नमः	—	वक्षस्थल (हृदय)
ॐ यमान्तकाय नमः	—	सिर
ॐ विघ्नान्तकाय नमः	—	दक्षिण स्कन्ध
ॐ नरान्तकाय नमः	—	वाम स्कन्ध

ध्यान

दोनों हाथ जोड़कर श्रद्धायुक्त हृदय से भगवती तारा का ध्यान करें—

प्रत्यालीढ पदार्पिताग्निशिवहृद् घोराट्टहासा परा,
खड्गेन्दीवरकर्तृ खर्परभुजा हूँकारबीजोद्भवा।
खर्वानील विशालपिंगल जटा जूटैकनागैर्युता;
जाड्यं न्यस्य कपालिके त्रिजगतां हन्त्युग्रतारा स्वयम् ।।

“शिव के ऊपर पैर रखी हुई, घोर अट्टहास करती हुई, तलवार, खप्पर तथा एक हाथ में कमल को धारण की हुई, शत्रुओं को भयभीत करने के लिए हुंकार ध्वनि करने वाली तथा विशाल जटा भार से शोभित, हे भगवती तारे! तीनों लोकों की जड़ता को दूर करते हुए ज्ञान की ओर हमें प्रेरित करें।”

विनियोग

दाहिने हाथ में जल लेकर विनियोग मंत्र बोल कर जमीन पर छोड़ दें—

अस्य श्रीतारामंत्रस्य अक्षोभ्य ऋषिः, ब्रह्मती छन्दः, तारा देवता,
हीं बीजं, हुं शक्तिः, स्त्रीं कीलकं, ममाभीष्ट सिद्ध्ये जपे विनियोगः।

न्यास

विनियोग के बाद अपने शरीर के प्रत्येक अंगों की दृढ़ता एवं पुष्टता के लिए ‘कर न्यास’ एवं ‘अंग न्यास’ करें—

कर न्यास		अंग न्यास
ॐ हां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः।
ॐ हीं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा।
ॐ हूं	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्।
ॐ हैं	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुम्।
ॐ हौं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ हः	करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्।

मंत्र जप

“मूंगा माला” से निम्न मंत्र की तेरह माला जप करें—

मंत्र ।। ॐ हीं स्त्रीं फट् ।।

नीराजन

मंत्र जप के पश्चात् घी के दीपक से निम्न मंत्र बोलते हुए आरती करें—

नीराजनं सुमंगल्यं कपूरण समन्वितम् ।
चन्द्रार्क वह्नि सदृशं महादेवि! नमोऽस्तुते ॥

नमस्कार

नीराजन के पश्चात् नमस्कार करें—

नमः सर्वहितार्थायै जगदाधार हेतवे ।
साष्टांगोऽयं प्रणामस्तु प्रयत्नेन मयाकृतः ॥

उपरोक्त वर्णित क्रम के अनुसार ही तीनों दिन पूजन करें। तीसरे दिन नमस्कार-प्रार्थना करने के पश्चात् देवी को भक्ति-भाव से प्रणाम कर अपनी मनोकामना की शीघ्र पूर्ति हेतु प्रार्थना करें।

विसर्जन

नमस्कार के पश्चात् विसर्जन मंत्र का उच्चारण करें—

इमां पूजां मया देवि! यथा शक्त्युपपादिताम् ।
रक्षार्थं त्वां समादाय ब्रजस्थानमनुत्तमम् ॥

यंत्र, चित्र, लवंग व पूजा में प्रयुक्त पुष्पादि को बाजोट पर बिछे कपड़े में लपेट कर मौली (कलावा) से बांध दें और किसी नदी या तालाब में विसर्जित कर दें।

॥ इति सिद्धिम् ॥



श्री तारा स्तोत्रम्

घोररूपे महामाये सर्वशत्रुवशंकरि ।
भक्तेभ्यो वरदे देवि! त्राहि मां शरणागतम् ॥१॥

सुरासुरार्चिते देवि! सिद्धगन्धर्वसेविते ।
जाड्यपापहरे देवि! त्राहि मां शरणागतम् ॥२॥

जटाजूटसमायुक्ते लोलजिह्वानुकारिणि ।
द्रतबुद्धिकरे देवि! त्राहि मां शरणागतम् ॥३॥

सौम्यरूपे घोररूपे चण्डरूपे नमोऽस्तु ते ।
सृष्टिरूपे नमस्तुभ्यं त्राहि मां शरणागतम् ॥४॥

जडानां जडतां हंसि भक्तानां भक्तवत्सले ।
मूढता हर मे देवि! त्राहि मां शरणागतम् ॥५॥

हूं हूंकारमये देवि! बलिहोमप्रिये नमः ।
उग्रतारे नमस्तुभ्यं त्राहि मां शरणागतम् ॥६॥

अष्टम्यां च चतुर्दश्यां नवम्यां चैकमानसः ।
षण्मासैः सिद्धिमाप्नोति नात्र कार्या विचारणा ॥७॥

बुद्धिं देहि यशो देहि कवित्वं देहि देहि मे ।
कुबुद्धिं हर मे देवि! त्राहि मां शरणागतम् ॥८॥

इन्द्रादि दिविषु वृन्दवन्दिते करुणामयि ।
तारे ताराधिनाथास्ये! त्राहि मां शरणागतम् ॥९॥

मोक्षार्थी लभते मोक्षं धनार्थी धनमाप्नुयात् ।
 विद्यार्थी लभते विद्यां तर्कव्याकरणादिकाम् ॥१०॥
 इदं स्तोत्रं पठेद्यस्तु सौभाग्यं लभते नरः ।
 तस्य शत्रुः क्षयं याति महाप्रज्ञा च जायते ॥११॥
 पीडायां वापि संग्रामे जप्ये दाने तथा भये ।
 य इदं पठति स्तोत्रं शुभं तस्य न संशयः ॥१२॥
 स्तोत्रेणानेन देवेशि! स्तुत्वा देवीं सुरेश्वरीम् ।
 सर्वान् कामानवाप्नोति सर्वविद्यानिधिर्भवेत् ॥१३॥
 इति ते कथितं दिव्यं स्तोत्रं सारस्वतप्रदम् ।
 अस्मात् परतरं नास्ति स्तोत्रं तन्त्रे महेश्वरि ॥१४॥

॥ इति बृहन्नील तन्त्रे श्री तारा स्तोत्रम् ॥



जीवन को निष्कण्टक बनाने का रहस्य

ये छह मांत्रोक्त दीक्षाएं

पूज्यपाद गुरुदेव के वरद हस्त तले

१. गुरु दीक्षा : प्रारम्भिक एवं आवश्यक दीक्षा, प्रत्येक साधना की नींव।
२. ज्ञान दीक्षा : जन्म-जन्मांतरों के कर्मों को काटने की दीक्षा। उच्च कोटि की दीक्षाओं के लिए प्रथम चरण।
३. धन्वन्तरी दीक्षा : जिससे शरीर रोग रहित और बलवान बन सके। जीवन व साधनाओं में सफलता के लिए आवश्यक।
४. महालक्ष्मी दीक्षा : जीवन में आध्यात्मिक उन्नति के साथ ही साथ आवश्यक है भौतिक समृद्धता, इसी का उपाय है यह दीक्षा।
५. शक्तिपात द्वारा कुण्डलिनी जागरण : लम्बी साधनाओं की अपेक्षा कुण्डलिनी जागरण की सहज पद्धति। समर्थ व सक्षम पूज्यपाद गुरुदेव द्वारा।
६. भुवनेश्वरी दीक्षा : केवल मात्र एक साधना, एक दीक्षा से भोग व मोक्ष दोनों ही प्राप्त कर लेने का अवसर।

हर गृहस्थ के लिए आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है ये दीक्षाएं

नोट - दीक्षा के समय व दिन टेलीफोन पर
 अथवा पत्र द्वारा पूर्व निर्धारित कर लें।

सम्पर्क

गुरुधाम,
 ३०६- कोहाट एन्क्लेव,
 पीतमपुरा, नई दिल्ली-३४,
 फोन: ०११-७१८२२४८,

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान,
 हाईकोर्ट कॉलोनी,
 जोधपुर(राज.) ३४२००९,
 फोन: ०२९१-४३२०१०